केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15					
16					

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

➔ प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

DR. N.K. URMALIYA
(U.M.S.)
CM RISE GHSS MEDICAL
V.No.-V71051074
MOB.-9993616074

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

ANJU JAIN. 9179422571
V71051091

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र 1 का उत्तर

(i) (ब) श्री

(ii) (अ) 1556

(iii) (स) दो

(iv) (ब) अर्थालंकार

(v) (अ) भगत जी

(vi) (स) नी

B
S
F

3

6 + 6 = 12

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 2 का उत्तर

~~जैनेन्द्र कुमार~~

(i) जैनेन्द्र कुमार ।

(ii) तीन ।

(iii) पाठशाला ।

(iv) वेब दुनिया ।

(v) भार ।

(vi) व्यतिरेक ।

BSE

P.T.O

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 3 का उत्तर

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) सत्य

(iv) सत्य

(v) असत्य

(vi) असत्य

BSE

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 4 का उत्तर

'क'			'ख'
(i) कथानक	→	(फ.)	कहानी
(ii) संस्कृत के मूल शब्द	→	(ई.)	तत्सम
(iii) यशोधर बाबू	→	(इ)	सिल्वर वैडिंग
(iv) अंतरंग साक्षात्कार	→	(स)	डायरी
(v) हरिवंशराय बच्चन	→	(द)	हालावाद
(vi) ~~यशोधरा~~ प्रगतिवाद	→	(अ)	1936
(vii) यशोधरा	→	(ब.)	खण्डकाव्य

B
S
E

P.T.O.

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 6 के अंक | कुल अंक

25 + 7 = 32

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र 5 का उत्तर

(I) सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा नगर मुअनजो-दड़ो था।

(II) रेडियो नाटक की अवधि 15 से 30 मिनट की होती हैं।

(III) सूरज का सातवा घोड़ा 'धर्मवीर भारती' की रचना हैं।

(IV) शांत रस का स्थायी भाव निर्वेद हैं।

(V) आलोक धन्वा का एक मात्र संग्रह 'दुनिया रोज बनती हैं' हैं।

(VI) पहलवान लुट्टन सिंह के दो पुत्र थे।

(VII) बाल-बाल बचना का अर्थ "कठिनाई में पड़ने से बचना" हैं।

BSE

32 + 2 = 34

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र॰ 6 का उत्तर

भक्तिन के आ जाने से महादेवी वर्मा अधिक देहाती हो गई, क्योंकि भक्तिन ने महादेवी वर्मा को देहाती खाना की विशेषताएँ बता-बताकर उसका ~~ब~~ आदि बना दिया था। लेखिका भक्तिन को ज्वार से बनी खिचड़ी, बाजरे के तिल लगाकर बनाए गए ~~लड्डू~~ पुएँ, मट्ठा, मकई का दलिया आदि खाना प्रतिदिन दिया करती थी। भक्तिन जब से लेखिका के घर में आई थी, तब से अब तक वह लेखिका की शहरी भाषा तो नही सीख पाई थी, परंतु लेखिका उसकी ग्रमीण भाषा जरूर सीख ली थी।

B
S
E

P.T.O.

34 + 2 = 36

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL,BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL,BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL,BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL,BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL,BOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 7 का उत्तर

'अथवा'

आत्मकथा और जीवनी में अंतर निम्नलिखित है —

आत्मकथा	जीवनी
1. आत्मकथा स्वयं के द्वारा लिखी जाती है।	1. जीवनी किसी दूसरे [illegible] के द्वारा लिखी जाती है।
2. आत्मकथा को लेखक अपने जीवन काल में लिखता है।	2. जीवनी किसी व्यक्ति के मरने के बाद लिखी जाती है।
3. आत्मकथा मे लेखक स्वयं के गुण एवं दोष को लिखता है।	3. जीवनी में लेखक दूसरे व्यक्ति के गुण व दोष को लिखता है।

B S I

36 + 2 = 38

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 8 का उत्तर

निपात शब्द :—
निपात का अर्थ होता है — बल देना। अर्थात शब्द जो किसी बात पर बल देने के लिए प्रयोग किए , निपात शब्द कहलाते हैं।

उदा० :—

(1.) राम को वहाँ जाना ही होगा।
(11.) तुम्हे बाजार जाकर किराने का सामान भी लाना है।

इन दोनो पंक्तियो में 'ही' & 'भी' निपात शब्द हैं, जिसका प्रयोग बात पर जोर देने हेतु किया है।

B S F

2

P.T.O.

(10)

38 + 2 = 40

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 10 के अंक | कुल अंक

EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 9 का उत्तर

'अथवा'

www.oddyindia.com बालक रोता है, और चुप हो जाता है।

(ii) शायद! मयूर वन में नाचता है।

B
S
E

50 + 2 = 52

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 10 का उत्तर

मुअनजोदड़ो की नगर नियोजन की दो विशेषताएं निम्नलिखित हैं —

(1.) मुअनजोदड़ो में जल-निकास की उचित व्यवस्था थी, एवं नालियाँ भी ढकी हुई थी।

(2.) मुअनजोदड़ो के बड़े-बड़े घरो में भी छोटे घर थे, इससे यह अंदाजा लगाया गया कि यहाँ की आबादी काफी रही होगी।

(3.) मुअनजोदड़ो में लगभग सात सौ कुएँ थे, जो इस बात का प्रतीक हैं कि यह एक जल संस्कृति थी।

(4.) मुअनजोदड़ो एक सुनियोजित नगर था।

P.T.O.

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 11 का उत्तर

समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय शैली 'उल्टा पिरामिड शैली' है। समाचार लेखन की इस शैली में सर्वप्रथम महत्वपूर्ण तथ्यों को लिखा जाता हैं, इसके पश्चात् महत्वपूर्णता के घटते क्रम में तथ्यों को लिखा जाता है। अंग्रेजी में इसे वर्टेड पिरामिड शैली के नाम से जाना जाता है। इस शैली लेखन करते समय समाचार को तीन भागों में बाँटा जाता हैं — इन्ट्रो, बॉडी, समापन।

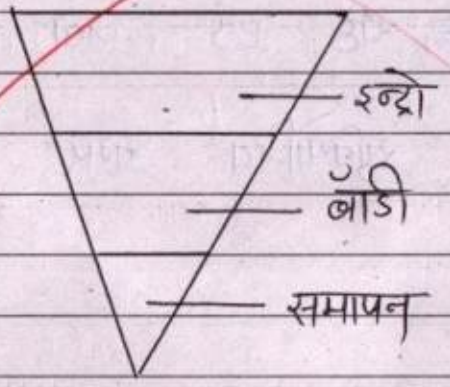

चित्र :— उल्टा पिरामिड शैली

BSE

44 + 2 = 46

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 12 का उत्तर

बच्चे अपने माता-पिता की प्रत्याशा में नीड़ से झांक रहे होंगे। जब प्रातः काल में माँ बच्चो के लिए खाने की तलाश में अपने घोसले से निकल जाती हैं, और ~~उसे~~ संध्या के समय आने में देर हो जाती हैं। तब चिड़िया के बच्चे यह सोचते हैं कि उनकी माँ उनके लिए खाना लेकर कब आएगी और ममता का मधुर स्पर्श करेगी। यही जिज्ञासा बच्चे के पंख में चंचलता भर देती हैं। बचपन में माँ की ममता ही एक मात्र ऐसी चीज होती हैं, जो बच्चो को सुकुन प्रदान करती हैं। इन सभी कारणो से ~~के~~ ~~कारण~~ ~~ही~~ बच्चे नीड़ से झांक रहे होंगे।

BSE

P.T.O

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 13 का उत्तर

'अथवा'

प्रयोगवाद के प्रवर्तक का नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' हैं।

प्रयोगवाद की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं —

(1) भावुकता की जगह बौद्धिकता की प्रधानता :- प्रयोगवादी रचनाओं में भावुकता की भावना बहुत कम दिखाई देती है, इस युग के कवियों व लेखकों ने बौद्धिकता पर विशेष बल दिया है।

(2) फ्रॉयड के कार्य सिद्धांतों का पालन :- इस युग के रचनाकारों ने फ्रायड के कार्य सिद्धांतों का अनुसरण किया है।

(3) नवीन उपमानों का प्रयोग :- इस युग में नवीन उपमानों का प्रयोग किया गया है।

48 + 2 = 50

मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION.MADHYAPRADESH.BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 14 का उत्तर

हिन्दी दो महाकाव्य के नाम व उनके रचनाकार निम्नलिखित हैं —

(1.) महाकाव्य	रचनाकार
~~(11)~~ (1.) ~~पृथ्वीराज रासो~~ चंदबरदाई	पृथ्वी राज रासो
(2.) रामचरितमानस	गोस्वामी तुलसीदास
(3.) कामायिनी	जयशंकर प्रसाद

BSE

P.T.O

(16)

50 + 2 = 52

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 15 का उत्तर

अथवा

वीर रस :—

सहृदय के हृदय में जब 'उत्साह' नामक स्थायी भाव का संयोग संचारी भाव, विभाव व अनुभाव के साथ [illegible] जाता है, तब जिस रस की निष्पत्ति होती है, उसे [illegible]र रस कहते हैं।

उदाहरण :—

'चमक उठी सन सन्तावन की वो तलवार पुरानी थी ।
बुंदेले हरबोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी' ।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र॰ 16 का उत्तर (अथवा)

हजारी प्रसाद द्विवेदी

(1.) दो रचनाएँ :— 1. ~~सूर-साहित्य~~ अशोक के फूल ।
2. साहित्य का मर्म ।

(11) भाषा-शैली :— हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी रचनाओ में परिमार्जित खड़ी बोली का प्रयोग किया हैं। भाषा का अधिकार होने के कारण यह कठिन से कठिन विषयो को भी मौज ही मौज मे लिख दिया करते हैं। इन्होने अपनी रचनाओ मे लोकोक्तियो व मुहावरे का भी सुंदर चित्रण किया हैं।

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी रचनाओ में हास्य-व्यंगात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक व वर्णात्मक शैली का प्रयोग किया हैं।

(111) साहित्य में स्थान :— जिस प्रकार मोती की माला को पिरोने मे धाँगे का महत्वपूर्ण स्थान होता हैं, उसी प्रकार हिन्दी गद्य साहित्य में इनका महत्वपूर्ण स्थान हैं। इनकी इन्ही उपलब्धियो के कारण इन्हे 'साहित्य अकादमी' जैसे पुरस्कार से भी नवाजा गया हैं।

BSE

ST-16A4

P.T.O

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 17 का उत्तर (अथवा)

मुहावरा व लोकोक्ति में अंतर निम्नलिखित हैं —

मुहावरा	लोकोक्ति
(1) अपने साधारण अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ देने वाले शब्द, मुहावरे कहलाते हैं।	(1) लोक मे प्रचलित उक्तियाँ, लोकोक्तियाँ कहलाती हैं।
(11) मुहावरा एक लघु वाक्यांश होता हैं।	(11) लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य होती हैं।
(111) मुहावरे का प्रयोग वाक्यो के बीच में होता हैं।	(1v) लोकोक्ति स्वतंत्र होती हैं प्रयोग वाक्यो के बीच मे नहीं करते हैं।

BSE

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 18 का उत्तर

रघुवीर सहाय

(1.) दो रचनाएँ :— 1. लोग भूल गए हैं।
2. एक समय था।

(II) भावपक्ष :— रघुवीर सहाय ने अपनी रचनाओ में जन-सामान्य से जुड़े हुए तथ्यो का वर्णन किया हैं। इन्होने रेल, बस, ट्रेन, अखबार, संसद, सड़क, चौराहा आदि पर अनेक रचनाएँ लिखी हैं।

कलापक्ष :— रघुवीर सहाय ने अपनी रचनाओ मे खड़ी बोली का प्रयोग किया हैं। इनकी रचनाओ में तत्सम व तद्भव शब्दो की प्रधानता रही हैं। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकार का भी इन्होने अपनी रचनाओ मे प्रयोग किया हैं।

(III) साहित्य मे स्थान :— रघुवीर सहाय ने पद्य साहित्य के क्षेत्र में विशेष कीर्ति पाई हैं, इसी कारण इन्हे 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से नवाजा गया हैं। इनकी इन्ही उपलब्धियो को देखते हुए यह कहना गलत न होगा कि जब तक गंगा की धवल धारा बहती रहेगी तबतक हिन्दी पद्य साहित्य मे इनका नाम अमर रहेगा।

योग पूर्व पृष्ठ

BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 19 का उत्तर

'अथवा'

(i) उपयुक्त गद्यांश का उचित शीर्षक "शौर्यभाव" है।

B (ii) राष्ट्रीय भावना में शौर्यभाव का विशिष्ट स्थान है।

S (iii) सुदीर्घ शब्द का अर्थ बहुत बड़ा होता है।

E

64 + 4 = 68

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 20 का उत्तर

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक आरोह भाग-II के कवितावली से लिया गया हैं, जिसके कवि तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग :- इस पद्य में तुलसीदास जी ने संसार में फैले अकाल का वर्णन किया हैं।

B
S
E

व्याख्या :- तुलसीदास जी कहते हैं कि व्यापारी वर्ग, किसान-लोग, बनिया, भिखारी, प्रशंसा गीत गाने वाले, नौकर-चाकर, चतुर नृत्य करने वाले, चोर, दूत और बाजीगर सभी अपने पेट के लिए कार्य कर रहे हैं। कोई पढ़ाई कर रहा हैं, तो कोई पहाड़ पर चढ़ रहा हैं और कोई घने जंगल में शिकार की तलाश कर रहे हैं। पेट के लिए लोग ऊंचे-नीचे कर्म कर रहे हैं व धर्म-अधर्म के बारे में भी नहीं सोच रहे हैं। पेट के लिए वे अपनी बेटी व बेटे को भी बेचने को तैयार हैं। अतः तुलसीदास जी भगवान राम (घनस्याम) से प्रार्थना कर रहे हैं, कि हे घनस्याम! अब तुम ही इस पेट की आग को बुझा सकते हो, क्योंकि पेट की अग्नि समुद्र की अग्नि से भी बड़ी हैं।

विशेष :- (I.) इस पद्य मे कवि ने पेट की आग का वर्णन किया हैं।
~~(II.) किसान-कुल, ऊंचे-नीचे बेटा-बेटकी मे अनुप्रास अलंकार समाहित हैं।~~

P.T.O →

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

(ii) ऊंचे - नीचे में विपरीतार्थक शब्द युग्म का प्रयोग किया गया है।

(iii) तुलसी ने अपने समय में फैले अकाल का वर्णन किया है।

प्रश्न क्र० 21 का उत्तर

B
S
E

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य - पुस्तक आरोह भाग-II के 'शिरीष के फूल' नामक पाठ से लिया गया है, जिसके लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हैं।

प्रसंग :- इस गद्य मे लेखक ने शिरीष के पेड़ का वर्णन किया हैं।

व्याख्या :- इस गद्य मे लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी जी कहते हैं कि शिरीष का ~~पौधा~~ पेड़ एक अवधूत अर्थात् संन्यासी की भाँति होता हैं। जिस प्रकार संन्यासी जीवन के दुःख और सुःख दोनो मे समानता लिए होता हैं ठीक उसी प्रकार शिरीष भी प्रचंड गर्मी व लू में खिलता हैं। उसे किसी से लेना-देना नही होता हैं। जब इस पृथ्वी में प्रचंड गर्मी पड़ती हैं और धरती ~~औ~~ व आसमान

प्रश्न क्र.

जलते रहते हैं तब भी यह खिलता रहता हैं। और वातावरण से रस चूषता रहता हैं। शिरीष के पेड़ की छावा में मनुष-जन मौज करते रहते हैं।

विशेष :— (I.) इस गद्य में लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत की भाँति कहा हैं।

(II.) लेखक ने शिरीष के पेड़ की विशेषताओ को उजागर किया हैं।

BSE

P.T.O.

प्रश्न क्र.

B
S
E

प्रश्न क्र० 22 का उत्तर

18 E, अम्बेडकर नगर
बैहर (म.प्र.)
दिनाँक : फरवरी 6, 2024
सेवा में,
निगमायुक्त महोदय,
~~विषय :— हमारे क्षेत्र में नियमित जल आपूर्ति हेतु आवेदन पत्र।~~
नगर निगम, बालाघाट
विषय :- हमारे क्षेत्र में नियमित जल आपूर्ति हेतु आवेदन पत्र।
महोदय जी,

सनम्र निवेदन है कि हम आपके क्षेत्र के निवासी हैं। हमारे क्षेत्र में जल की आपूर्ति नियमित रूप से नहीं हो पा रही है। जिसके कारण क्षेत्रवासियों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। महिलाएँ दूर-दूर जाकर जल इकट्ठा करने में लगी हुई हैं।

अतः निगमायुक्त म[illegible]य जी से निवेदन है कि कृपया आप इस समस्या को जल्द से जल्द दूर [illegible] ताकि हमारे क्षेत्र में जल की आपूर्ति नियमित हो सके।

'प्रार्थीगण'
समस्त क्षेत्रवासी (बैहर)

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 23 का उत्तर

(V.) प्रदूषण का बढ़ता प्रभाव

रूपरेखा :-

(I.) प्रस्तावना ।
(II.) प्रदूषण के प्रकार ।
(III.) प्रदूषण के कारण ।
(IV.) प्रदूषण से हानियाँ ।
(V.) उपसंहार ।

BSE

(I.) प्रस्तावना :-

वायुमण्डल में उपस्थित गैसो का संतुलन बिगड़ जाना ही प्रदूषण कहलाता हैं। प्रदूषण आज के इस आधुनिक युग की सबसे बड़ी समस्या बनी हुई हैं। मनुष्य प्रकृति के साथ दिन-प्रतिदिन छेड़खानी कर रहा हैं, जिसके फलस्वरूप प्रदूषण का खतरा काफी बढ़ते जा रहा हैं। आत्मनिर्भर भारत का संकल्प लेकर चलने वाला मनुष्य भी आज पर्यावरण को प्रदूषित करने में लगा हुआ हैं। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए यह नहीं सोच रहा हैं, कि इससे हमारी आने वाली पीढी को क्या नुकसान होगा ? वह प्रकृति को मजाक समझ रहा हैं।

P.T.O.

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(2.) प्रदूषण के प्रकार :—

वायुमण्डलीय प्रदूषण के अनेको प्रकार हैं, लेकिन इसमे कुछ प्रमुख प्रकार निम्नानुसार है—

(1.) जल प्रदूषण :- कारखानो से निकलने वाला दूषित जल सीधे नदी तालाबो में प्रवाहित हो रहा हैं, जिससे जल प्रदूषण का खतरा बढ़ता जा रहा है।

(II) वायु प्रदूषण :- फैक्ट्रियो की चिमनियो से निकलने वाला धुँआ वायुमंडल को प्रदूषित कर रहा हैं।

(III) ध्वनि प्रदूषण :- बड़े - बड़े कारखानो, फैक्ट्रियो की आवाज से ध्वनि प्रदूषण बढ़ता जा रहा हैं, जिसके कारण लोगो की सुनने की क्षमता कम होती जा रही हैं।

(3.) प्रदूषण के कारण :—

वायुमण्डलीय प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण मनुष्य हैं। मनुष्य का विज्ञान की ओर झुकाव ही प्रदूषण को बढ़ा रहा हैं। मनुष्य मोटर-बाईको, कार, बस, ट्रेन आदि का अंधाधुन्ध प्रयोग कर रहा हैं, जिसके चलते इन उपकरणो के धुँए से प्रदूषण बढ़ते जा रहा हैं। मनुष्य अपने हित में प्रकृति से छेड़छाड़ कर रहा हैं जिसके फलस्वरूप वातावरण का संतुलन बिगड़ते जा रहा हैं।

B
S
E

75 + 4 = 79

प्रश्न क्र.

(4.) प्रदूषण से हानियाँ :-

प्रदूषण के कारण मनुष्य मे अनेक बीमारियाँ फैल रही हैं। कई बड़ी-बड़ी बीमारियो का कही न कही कारण प्रदूषण ही रहा है। प्रदूषण न केवल मनुष्य बल्कि पशु-पक्षियो में भी रोगो का कारक बन रहा है। पशु-पक्षी दिन-प्रतिदिन बढ़ने वाले प्रदूषण को सहन कर पाने मे असक्षम हैं, जिसके फलस्वरूप उनकी जन संख्या लगातार कम होती जा रही हैं।

BSE

(5.) उपसंहार :-

प्रदूषण के इस खतरे को रोकने के लिए सरकार कई तरह के जरूरी कदम उठा रही हैं जैसे स्वच्छ भारत आंदोलन। लेकिन लोगो की मनमानी के चलते यह योजनाएँ असफल होती नजर आ रही हैं। सरकार ने इसके लिए अनेक कानून भी प्रतिपादित किए हैं परंतु वह असफल रहे। जब तक देश का प्रत्येक व्यक्ति यह संकल्प न ले ले कि हम सब को मिलकर यह प्रदूषण के प्रभाव को कम करना हैं तब तक यह देश प्रदूषण रहित नही हो सकता हैं।

"जन-जन ने यह ठाना हैं, प्रदूषण दूर भगाना हैं"